Class - B.Com II
Subject - MFI
Paper - IV (S)
Topic - Inflation
Lecture - 19
By Dr C P Sahu
Marwari College, DAR.

मुद्रास्फीति (Inflation)

मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन के कारण वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में भी परिवर्तन होते रहते हैं। इसके परिवर्तन होने से व्यापार चक्र (Trade Cycle) का जन्म होता है। इस तरह मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन की जो स्थितियाँ आती हैं उसे मुद्रा स्फीति एवं मुद्रा संकुचन व (मुद्रा विस्फीति) (Deflation) कहा जाता है।

मुद्रा स्फीति एक गति है अर्थात किसी विशेष समय में घटने वाली घटना नहीं है। किसी समय माँग के बढ़ने पर उत्पादन में वृद्धि करने की आवश्यकता होती है। जब मुद्रा की मूल्य में कमी आती है तो वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होती है।

मुद्रास्फीति Inflation की अंग्रेजी शब्द का अर्थ प्रसार या फैलाव व स्फीति है। लेकिन व्यवहार में इसे मुद्रास्फीति या मुद्रा प्रसार भी कहते हैं। जब वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य के स्तर में वृद्धि होने लगती है मुद्रा का मूल्य में कमी आने लगता है ऐसी स्थिति को मुद्रा स्फीति कहा जाता है।

मुद्रा स्फीति की परिभाषा को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित विद्वानों ~~[illegible]~~ ने अपना विचार प्रकट किये हैं: —

<u>प्रो० कैमरर</u> – "यदि मुद्रा की मात्रा अधिक हो और वस्तुओं की मात्रा उत्पादन में कमी होने के कारण घट जाये, तब ऐसी परिस्थिति को मुद्रास्फीति कहते हैं।"

<u>पीगू</u> – "मुद्रा स्फीति की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब मौद्रिक आय उत्पादन की तुलना में अधिक बढ़ रही हो।"

<u>क्राउथर</u> – "मुद्रा-स्फीति वह स्थिति है जिसमें मुद्रा का मूल्य गिर रहा हो अर्थात वस्तुओं का मूल्य बढ़ रहा हो।"

<u>वॉकर के अनुसार</u> - मुद्रा-स्फीति की अवस्था तब उत्पन्न होती है जब वस्तुओं एवं सेवाओं की उपलब्ध पूर्ति की तुलना में मुद्रा की मात्रा अधिक तेजी से बढ़ती है।"

Scanned with CamScanner

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि मुद्रा स्फीति एक गतिशील प्रक्रिया है जिसे दीर्घ अवधि में ही अनुभव किया जा सकता है। कीमत स्तर में होने वाले प्रत्येक वृद्धि को स्फीति नहीं कहा जा सकता, कीमत स्तर में होने वाले क्रमिक तथा निरन्तर वृद्धि को ही स्फीति मान सकते हैं। (2)

मुद्रा स्फीति के प्रकार :-

① चलन स्फीति (Currency Inflation) जब देश की मुद्रा की मात्रा बढ़ जाने से स्फीति उत्पन्न होता है, तो उसे चलन स्फीति कहते हैं। जब सरकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केन्द्रीय बैंक द्वारा अधिक मात्रा में कागजी नोट जारी करता है तब वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि होती है तब इसे चलन स्फीति कहा जाता है।

② लाभ स्फीति — कई कारणों से उत्पादन लागत में कमी आने लगती है जिसके कारण कीमतों में कमी होने की प्रवृत्ति आने लगती है लेकिन जबकि कृत्रिम उपायों से कीमतों को नीचे गिरने से रोकती है। जिससे उत्पादकों को अधिक लाभ होने लगता है।

③ साख स्फीति जब देश के व्यापारिक बैंक तीव्र गति से साख

उधार देने लगाते हैं तो वस्तुओं की माँग में बहुत अधिक वृद्धि होती है। इसके प्रभावस्वरूप भी मूल्यों में ~~वृद्धि~~ हो वृद्धि होने लगती है।

(4) **उत्पादन स्फीति** - जब देश में मुद्रा की मात्रा में कोई वृद्धि नहीं होती है लेकिन - बाढ़, भूकम्प, महामारी, मानसून और प्राकृतिक कारण उत्पादन में कमी हो जाती है तब वस्तुओं की कीमत में वृद्धि हो जाती है।

(5) **मजदूरी प्रोत्साहित स्फीति** - जब उत्पादन में वृद्धि न होने के कारण विक्रेता श्रमिक संघों के दबाव में आकर मजदूरों की मजदूरी बढ़ाने के लिए बाध्य करता है तो उत्पादन लागत में वृद्धि हो जाती है।

(6) **खुली एवं दबी हुई मुद्रा स्फीति** - किसी देश की अर्थव्यवस्था में बढ़ रहे मूल्यों पर कोई भी अंकुश नहीं लगाया जा रहा है और उसे स्वतंत्र रूप से बढ़ने की छूट दे दी गई है तो उसे खुली मुद्रा स्फीति कहते हैं और यदि बढ़ रहे मूल्यों पर सरकार नियंत्रण का प्रयास कर रही हो तो उसे दबी हुई मुद्रा स्फीति कहते हैं।

(7) **लागत प्रोत्साहन स्फीति** - उत्पादन के विभिन्न साधनों के मूल्य में वृद्धि होने से भी उत्पादन लागत में वृद्धि होती है।

इनके अलावा भी अन्य प्रकार हैं — वस्तु स्फीति, लागत प्रेरित ~~उत्पादन स्फीति~~, अवमूल्यन जनित स्फीति एवं माँग प्रोत्साहित स्फीति

इस प्रकार मुद्रास्फीति के विभिन्न प्रकार का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मुद्रास्फीति के अधिकांश रूप सरकारी नीतियों से उत्पन्न होती हैं। कुछ रूप प्राकृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक तत्वों के कारण उत्पन्न होते हैं।

मुद्रास्फीति के प्रभाव (Effects of Inflation)

(A) आर्थिक प्रभाव ~~के अन्तर्गत~~

मुद्रास्फीति विभिन्न वर्गों को विभिन्न तरह से प्रभावित करते हैं। इससे कुछ समय तक आर्थिक प्रगति को बल तथा रोजगार व्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है लेकिन इसकी निरंतर वृद्धि आर्थिक विकास की गति को बाधित कर देती है।

(1) सामान्य जनता को कष्ट, (2) उत्पादक वर्ग (3) उपभोक्ता वर्ग (4) श्रमिक वर्ग (5) निश्चित आय वाला वर्ग अथवा वेतनभोगी वर्ग (6) सरकार (7) अन्तर्राष्ट्रीय भुगतान पर कुप्रभाव (8) ऋणियों को लाभ तथा ऋणदाताओं को हानि (9) विनियोगताओं को लाभ।

(B) सामाजिक, राजनैतिक तथा अन्य प्रभाव : (1) आर्थिक विषमता में वृद्धि, (2) रोजगार में वृद्धि (3) नैतिक पतन (4) घूसखोरी तथा सट्टेबाजी को प्रोत्साहन (5) बैंकिंग विकास (6) राजनैतिक प्रभाव (7) जमाखोरी

Scanned with CamScanner

मुद्रास्फीति को रोकने के उपाय

(5)

(A) मौद्रिक उपाय - (1) मुद्रा की मात्रा को नियंत्रित करना (2) पुरानी मुद्रा के बदले पर नयी मुद्रा (3) साख स्फीति को कम करना

(B) राजकोषीय उपाय - (1) बजट में सन्तुलन (2) ऋण प्राप्ति (3) सार्वजनिक व्यय पर नियंत्रण (4) बचतों को प्रोत्साहन (5) मजदूरी बन्धन (6) उत्पादन वृद्धि (7) मूल्य नियंत्रण

(C) अन्य उपाय - (1) मूल्य नियंत्रण एवं राशन व्यवस्था लागू करना (2) निश्चित आय वाले वर्गों को महँगाई भत्ता देना

(d) मूल्यों में स्थिरता इत्यादि।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट होता है कि विकासशील तथा नियोजित अर्थव्यवस्था के प्रारम्भिक समय में मुद्रास्फीति की हल्की मात्रा लाभ पहुँचाने वाली होती है। लेकिन मुद्रास्फीति का प्रयोग दवा की भाँति ही करना चाहिए। मुद्रास्फीति को अफीम की तरह समझा जाय जिसका प्रयोग औषधि के रूप में किया जाय तो लाभदायक होगा क्योंकि आदत पड़ने पर वह कार्यक्षमता एवं शरीर का ~~विनाश~~ विनाश भी कर देती है।

x